

# NCERT Solution

---

## पाठ - 01

### ध्वनि

#### कविता से:

**उत्तर1:** कवि को ऐसा विश्वास इसलिए है क्योंकि अभी उसके मन में नया जोश व उमंग है। अभी उसे काफ़ी नवीन कार्य करने हैं। वह युवा पीढ़ी को आलस्य की दशा से उबारना चाहते हैं।

**उत्तर2:** फूलों को अनंत तक विकसित करने के लिए कवि उन्हें कलियों की स्थिति से निकालकर खिले फूल बनाना चाहता है। कवि का मानना है कि उसके जीवन में वसंत आया हुआ है। इसलिए वह कलियों को हाथों के वासंती स्पर्श से खिला देगा। वह फूलों की आँखों से आलस्य हटाकर उन्हें चुस्त व जागरूक करना चाहता है।

**उत्तर3:** कवि पुष्पों की तंद्रा और आलस्य दूर हटाने के लिए उन पर अपना हाथ फेरकर उन्हें जगाना चाहता है। वह उनको चुस्त, प्राणवान, आभावान व पुष्पित करना चाहता है।

अतः कवि नींद में पड़े युवकों को प्रेरित करके उनमें नए उत्कर्ष के स्वप्न जगह देगा, उनका आलस्य दूर भगा देगा तथा उनमें नये उत्साह का संचार करना चाहता है।

#### कविता से आगे:

**उत्तर1:** वसंत को ऋतुराज कहा जाता है क्योंकि यह सभी ऋतुओं का राजा है। इस ऋतु में प्रकृति पूरे यौवन होती है। इस ऋतु के आने पर सर्दियाँ कम हो जाती हैं। मौसम सुहावना हो जाता है। इस समय पंचतत्व अपना प्रकोप छोड़कर सुहावने रूप में प्रकट होते हैं। पंचतत्व जल, वायु, धरती, आकाश और अग्नि सभी अपना मोहक रूप दिखाते हैं। पेड़ों में नए पत्ते आने लगते हैं। आम बौरों से लद जाते हैं और खेत सरसों के फूलों से भरे पीले दिखाई देते हैं। सरसों के पीले फूल ऋतुराज के आगमन की घोषणा करते हैं। खेतों में फूली हुई सरसों, पवन के झोंकों से हिलती, ऐसी दिखाई देती है, मानो, सामने सोने का सागर लहरा रहा हो। कोयल पंचम स्वर में गाती है और सभी को कुहू-कुहू की आवाज़ से मंत्रमुग्ध करती है। इस ऋतु में उसकी छठा देखते ही बनती है। इस ऋतु में कई प्रमुख त्यौहार मनाए जाते हैं, जैसे - वसंत पंचमी, महा शिवरात्रि, होली आदि।

**उत्तर2:** वसंत ऋतु में कई त्यौहार मनाए जाते हैं, जैसे - वसंत-पंचमी, महा शिवरात्रि, होली आदि।

होली हमारा देश भारत विश्व का अकेला एवं ऐसा अनूठा देश है, जहाँ पूरे साल कोई न कोई त्योहार मनाया जाता है। रंगों का त्योहार होली हिंदुओं का प्रसिद्ध त्योहार है, जो फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। यह त्योहार रंग एवं उमंग का अनुपम त्योहार है जब वसंत अपने पूरे यौवन पर होता है। सर्दियों को विदा देने और ग्रीष्म का स्वागत करने के लिए इसे मनाया जाता है। संस्कृत साहित्य में इस त्योहार को 'मदनोत्सव' के नाम से भी पुकारा जाता है।

---

# NCERT Solution

---

होली के संबंध में एक पौराणिक कथा प्रचलित है कि भगवान विष्णु के परम भक्त प्रहलाद को अग्नि में जलाने के प्रयास में उसकी बुआ 'होलिका' अग्नि में जलकर स्वाहा हो गई थी। इसी घटना को याद कर प्रतिवर्ष होलिका दहन किया जाता है। दूसरे दिन फाग खेला जाता है। इस दिन छोटे-बड़े, अमीर-गरीब आदि का भेदभाव मिट जाता है। सब एक दूसरे पर रंग फेंकते हैं, गुलाल लगाते हैं और गले मिलते हैं। चारों ओर आनंद, मस्ती और उल्लास का सम्राट बंध जाता है। ढोल पर थिरकते, मजीरों की ताल पर झूमते, नाचते-गाते लोग आपसी भेदभाव भुलाकर अपने शत्रु को भी गले लगा लेते हैं। परन्तु कुछ लोग अशोभनीय व्यवहार कर इस त्योहार की पवित्रता को नष्ट कर देते हैं।

हमारा कर्तव्य है कि हम होली का त्योहार उसके आदर्शों के अनुरूप मनाएँ तथा आपसी वैमनस्य, वैर-भाव, घृणा आदि को जलाकर एक-दूसरे पर गुलाल लगाकर आपस में प्रेम, एकता और सद्भाव बढ़ाने का प्रयास करें।

"होली के अवसर पर आओ एक दूसरे पर गुलाल लगाएँ अपने सब भेदभाव भुलाकर, प्रेम और सद्भाव बढ़ाएँ"

## भाषा की बात

**उत्तर 1:** बातों-बातों में - बातों-बातों में कब घर आ गया पता ही नहीं चला।

रह-रहकर - कल रात से रह-रहकर बारिश हो रही है।

लाल-लाल - लाल-लाल आँखों से पिताजी अमर को घूर रहे थे।

सुबह-सुबह - दादीजी सुबह-सुबह ही पूजा करने मंदिर निकल जाती हैं।

रातों-रात - ईश्वर की कृपा से रामन रातों-रात अमीर हो गया।

घड़ी-घड़ी - घड़ी-घड़ी शिक्षक उसे पढ़ाई में ध्यान लगाने के लिए टोकते रहते थे।

---

## पाठ - 02 लाख की चूड़ियाँ

**कहानी से:**

**उत्तर1:** बचपन में लेखक अपने मामा के गाँव चाव से इसलिए जाता था क्योंकि लेखक के मामा के गाँव में लाख की चूड़ियाँ बनाने वाला कारीगर बदलू रहता था। लेखक को बदलू काका से अत्यधिक लगाव था। वह लेखक को ढेर सारी लाख की रंग-बिरंगी गोलियाँ देता था इसलिए लेखक अपने मामा के गाँव चाव से जाता था।

गाँव के सभी लोग बदलू को 'बदलू काका' कहकर बुलाते थे इस कारण लेखक भी 'बदलू मामा' न कहकर 'बदलू काका' कहता था।

**उत्तर2:** 'वस्तु विनिमय' में एक वस्तु को दूसरी वस्तु देकर लिया जाता था। वस्तु के लिए पैसे नहीं लिए जाते थे। वस्तु के बदले वस्तु ली-दी जाती थी। किन्तु अब मुद्रा के चलन के कारण वर्तमान परिवेश में वस्तु का लेन-देन मुद्रा के द्वारा होता है। विनिमय की प्रचलित पद्धति पैसा है।

**उत्तर3:** इस पांति में लेखक ने कारीगरों की व्यथा की ओर संकेत किया है कि मशीनों के आगमन के साथ कारीगरों के हाथ से काम-धंधा छिन गया। मानो उनके हाथ ही कट गए हों। उन कारीगरों का रोजगार इन पैतृक काम धन्धों से ही चलता था। उसके अलावा उन्होंने कभी कुछ नहीं सीखा था। वे पीढ़ी दर पीढ़ी अपनी इस कला को बढ़ाते चले आ रहे हैं और साथ में रोज़ी रोटी भी चला रहे हैं। परन्तु मशीनी युग ने जहाँ उनकी रोज़ी रोटी पर वार किया है। मशीनों ने लोगों को बेरोजगार बना दिया।

**उत्तर4:** बदलू लाख की चूड़ियाँ बेचा करता था परन्तु जैसे-जैसे काँच की चूड़ियों का प्रचलन बढ़ता गया उसका व्यवसाय ठप पड़ने लगा। अपने व्यवसाय की यह दुर्दशा बदलू को मन ही मन कचौटती थी। बदलू के मन में इस बात कि व्यथा थी कि मशीनी युग के प्रभावस्वरूप उस जैसे अनेक कारीगरों को बेरोजगारी और उपेक्षा का शिकार होना पड़ा है। अब लोग कारीगरी की कद्र न करके दिखावटी चमक पर अधिक ध्यान देते हैं। यह व्यथा लेखक से छिपी न रह सकी।

**उत्तर5:** मशीनी युग से बदलू के जीवन में यह बदलाव आया कि बदलू का व्यवसाय बंद हो गया। वह बेरोजगार हो गया। काम न करने से उसका शरीर भी ढल गया, उसके हाथों-माथे पर नसें उभर आईं। अब वह बीमार रहने लगा।

**कहानी से आगे:**

---

## NCERT Solution

---

**उत्तर2:** लाख की वस्तुओं का निर्माण सर्वाधिक उत्तरप्रदेश में होता है। लाख से चूड़ियाँ, मूर्तियाँ, गोलियाँ तथा सजावट की वस्तुओं का निर्माण होता है।

### भाषा की बात

**उत्तर1:** व्यंग्य वाक्य - 'अब पहले जैसी औलाद कहाँ?'

व्याख्या - आजकल किसी भी बुजुर्ग के मुख से आमतौर पर यह सुनने मिलता है जिसमें उनके हृदय में छिपा दुःख और व्यंग्य देखने मिलता है। उनका मानना है कि आजकल की संतान बुजुर्गों को अधिक सम्मान नहीं देती।

**उत्तर2:** (क) व्यक्तिवाचक संज्ञा - बदलू, बेलन, मचिया।

(ख) जातिवाचक संज्ञा - आदमी, मकान, शहर।

(ग) भाववाचक संज्ञा - स्वभाव, रुचि, व्यथा।

**उत्तर3:** इंसान - मनुष्य

रंज - दुख

गम - मायूसी

ज़िंदगी - जीवन

औलाद - संतान

---

## पाठ - 03

### बस की यात्रा

#### कारण बताएँ:

**उत्तर1:** लेखक के मन में बस कंपनी के हिस्सेदार साहब के लिए श्रद्धा इसलिए जाग गई कि वह टायर की स्थिति से परिचित होने के बावजूद भी बस को चलाने का साहस जुटा रहा था। कंपनी का हिस्सेदार अपनी पुरानी बस की खूब तारीफ़ कर रहा था। अर्थ मोह की वजह से आत्म बलिदान की ऐसी भावना दुर्लभ थी जिसे देखकर लेखक हतप्रभ हो गया और उसके प्रति उनके मन में श्रद्धा भाव उमड़ता है।

**उत्तर2:** लोगों ने लेखक को यह सलाह इसलिए दी क्योंकि वे जानते थे की बस की हालत बहुत खराब है। बस का कोई भरोसा नहीं है कि यह कब और कहाँ रुक जाए, शाम बीतते ही रात हो जाती है और रात रास्ते में कहाँ बितानी पड़ जाए, कुछ पता नहीं रहता। उनके अनुसार यह बस डाकिन की तरह है।

**उत्तर3:** जब बस चालक ने इंजन स्टार्ट किया तब सारी बस झनझनाने लगी। लेखक को ऐसा प्रतीत हुआ कि पूरी बस ही इंजन है। मानो वह बस के भीतर न बैठकर इंजन के भीतर बैठा हुआ हो। अर्थात् इंजन के स्टार्ट होने पर इंजन के पुर्जों की भांति बस के यात्री हिल रहे थे।

**उत्तर4:** बस की वर्तमान स्थिति देखते हुए इस प्रकार का आश्चर्य व्यक्त करना स्वाभाविक था। देखने से लग नहीं रहा था कि बस चलती भी होगी परन्तु जब लेखक ने बस के हिस्सेदार से पूछा तो उसने कहा चलेगी ही नहीं, अपने आप चलेगी।

**उत्तर5:** बस की जर्जर अवस्था से लेखक को ऐसा महसूस हो रहा था कि बस की स्टीयरिंग कहीं भी टूट सकती है तथा ब्रेक फेल हो सकता है। ऐसे में लेखक को डर लग रहा था कि कहीं उसकी बस किसी पेड़ से टकरा न जाए। एक पेड़ निकल जाने पर वह दूसरे पेड़ का इंतज़ार करता था कि बस कहीं इस पेड़ से न टकरा जाए। यही वजह है कि लेखक को हर पेड़ अपना दुश्मन लग रहा था।

#### पाठ से आगे:

**उत्तर1:** 'सविनय अवज्ञा आंदोलन' महात्मा गाँधी के नेतृत्व में १९३० में अंग्रेज़ी सरकार से असहयोग करने तथा पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए किया गया था।

**उत्तर2:** 'सविनय अवज्ञा आंदोलन' १९३० में में सरकारी आदेशों का पालन न करने के लिए किया था। इसमें अंग्रेज़ी सरकार के साथ सहयोग न करने की भावना थी।

---

## NCERT Solution

---

लेखक ने 'सविनय अवज्ञा' का उपयोग बस के सन्दर्भ में किया है। वह इस प्रतीकात्मक भाषा के माध्यम से यह बताना चाह रहा है कि बस विनय पूर्वक अपने मालिक व यात्रियों से उसे स्वतंत्र करने का अनुरोध कर रही है।

### भाषा की बात

**उत्तर1:** वश - आज-कल के बच्चों को समझाना सबके वश की बात नहीं।

वश - भगवान की करनी मनुष्य के वश में नहीं।

बस - बस करो, कितना खाओगे?

बस - बस करो, इतना काफी है।

**उत्तर2:** कारक शब्द से निर्मित वाक्य -

१ यह समझ में नहीं आता कि सीट पर हम बैठे हैं या सीट हम पर बैठी है।

२ नई नवेली बसों से ज़्यादा विश्वसनीय है।

३ यह बस पूजा के योग्य थी।

४ बस कंपनी के एक हिस्सेदार भी उसी बस में जा रहे थे।

**उत्तर3:** टहलना - दादाजी को टहलना अच्छा लगता है।

चलना - चलना सेहत के लिए बहुत लाभदायक है।

**उत्तर4:** (क) जल - मीना गरम जल से बुरी तरह जल गई।

(ख) हार - यह प्रतियोगिता के इस पड़ाव में जिसकी जीत होगी उसे मोतियों का हार मिलेगा और जिसकी हार होगी वह प्रतियोगिता के बाहर हो जाएगा।

**उत्तर5:** संख्यावाचक विशेषण - चार, आठ, दस

गुणवाचक विशेषण - चाँदनीरात, समझदार आदमी

---

## पाठ - 04

### दीवानों की हस्ती

**कविता से:**

**उत्तर1:** कवि ने अपने आने को उल्लास इसलिए कहता है क्योंकि जहाँ भी वह जाता है मस्ती का आलम लेकर जाता है। वहाँ लोगों के मन प्रसन्न हो जाते हैं। पर जब वह उस स्थान को छोड़ कर आगे जाता है तब उसे तथा वहाँ के लोगों को दुःख होता है। विदाई के क्षणों में उसकी आखों से आँसू बह निकलते हैं।

**उत्तर2:** यहाँ भिखमंगों की दुनिया से कवि का आशय है कि यह दुनिया केवल लेना जानती है देना नहीं। कवि ने भी इस दुनिया को प्यार दिया पर इसके बदले में उसे वह प्यार नहीं मिला जिसकी वह आशा करता है। कवि निराश है, वह समझता है कि प्यार और खुशियाँ लोगों के जीवन में भरने में असफल रहा। दुनिया अभी भी सांसारिक विषयों में उलझी हुई है।

**उत्तर3:** कविता में कवि का जीवन के प्रति दृष्टिकोण अच्छा लगा। कवि कहते हैं कि हम सबके सुख-दुःख एक है तथा हमें एक साथ ही इन सुखों और दुखों को भोगना पड़ता है। हमें दोनों परिस्थितियों का सामना समान भाव से करना चाहिए। ऐसी दृष्टिकोण रखनेवाला व्यक्ति ही सुखी रह सकता है।

**भाषा की बात**

**उत्तर1:** 1. खींचकर

2. पीकर

3. मुस्कराकर

4. देकर

5. मस्त होकर

6. सराबोर होकर

# NCERT Solution

---

पाठ - 05

## चिट्ठियों की अनूठी दुनिया

पाठ से:

**उत्तर1:** पत्र जैसा संतोष फोन या एसएमएस का संदेश नहीं दे सकता क्योंकि फोन, एसएमएस द्वारा केवल कामकाजी बातों को संक्षिप्त रूप से व्यक्त कर सकते हैं। पत्रों द्वारा हम अपने मनोभावों को खुलकर व्यक्त कर सकते हैं। पत्रों से आत्मीयता झलकती है। इन्हें अनुसंधान का विषय भी बनाया जा सकता है। ये कई किताबों का आधार हैं। पत्र राजनीति, साहित्य तथा कला क्षेत्र में प्रगतिशील आंदोलन के कारण बन सकते हैं। यह क्षमता फोन या एसएमएस द्वारा दिए गए संदेश में नहीं।

**उत्तर2:** 1. खत - उर्दू  
2. कागद - कन्नड़  
3. उत्तरम् - तेलूगु  
4. जाबू - तेलूगु  
5. लेख - तेलूगु  
6. कडिद - तमिल  
7. पाती - हिन्दी  
8. चिट्ठी - हिन्दी  
9. पत्र - संस्कृत

**उत्तर3:** पत्र लेखन की कला को विकसित करने के लिए दुनिया के सभी देशों द्वारा पाठ्यक्रमों में पत्र लेखन का विषय शामिल किया गया। विश्व डाक संघ की ओर से 16 वर्ष से कम आयुवर्ग के बच्चों के लिए पत्र लेखन प्रतियोगिताएँ आयोजित करने का कार्यक्रम सन् 1972 से शुरू किया गया।

**उत्तर4:** पत्र व्यक्ति की स्वयं की हस्तलिपि में होते हैं, जो कि प्रियजन को अधिक संवेदित करते हैं। हम जितने चाहे उतने पत्रों को धरोहर के रूप में समेट कर रख सकते हैं जबकि एसएमएस को मोबाइल में सहेज कर रखने की क्षमता ज़्यादा समय तक नहीं होती है। एसएमएस को जल्द ही भुला दिया जाता है। पत्र देश, काल, समाज को जानने का साधन रहा है। दुनिया के तमाम संग्रहालयों में जानी-मानी हस्तियों के पत्रों का अनूठा संकलन भी है।

---



## NCERT Solution

---

**उत्तर5:** पत्रों का चलन न कभी कम हुआ था, न कभी कम होगा। चिट्ठियों की जगह कोई नहीं ले सकता है। पत्र लेखन एक साहित्यिक कला है परन्तु फेक्स, ई-मेल, टेलीफोन तथा मोबाइल जैसे तकनीकी माध्यम केवल काम-काज के क्षेत्र में महत्वपूर्ण हैं। आज ये आवश्यकताओं में आते हैं फिर भी ये पत्र का स्थान नहीं ले सकते हैं।

**पाठ से आगे:**

**उत्तर1:** बिना टिकट सादे लिफाफे पर सही पता लिखकर पत्र बैरंग भेजने पर पत्र को पाने वाले व्यक्ति को टिकट की धनराशि जुर्माने के रूप में देनी होगी।

**उत्तर2:** पिन कोड किसी खास क्षेत्र को संबोधित करता है कि यह पत्र किस राज्य के किस क्षेत्र का है। इसके साथ व्यक्ति का नाम और नंबर आदि भी लिखना पड़ता है।

पिन कोड का पूरा रूप है पोस्टल इंडेक्स नंबर। यह 6 अंको का होता है। हर एक का खास स्थानीय अर्थ होता है, जैसे - १ अंक राज्य, २ और ३ अंक उपक्षेत्र, अन्य अंक क्रमशः डाकघर आदि के होते हैं। इस प्रकार पिन कोड भी संख्याओं में लिखा गया एक पता है।

**उत्तर3:** महात्मा गांधी को दुनिया भर से पत्र 'महात्मा गांधी-इंडिया' पता लिखकर आते थे क्योंकि महात्मा गांधी अपने समय के सर्वाधिक लोकप्रिय व प्रसिद्ध व्यक्ति थे। वे भारत गौरव थे। गाँधी जी देश के किस भाग में रह रहे हैं यह देशवासियों को पता रहता था। अतः उनको पत्र अवश्य मिल जाता था।

**भाषा की बात**

**उत्तर1:** 1. प्रार्थना पत्र  
2. मासिक पत्र  
3. छः मासिक पत्र  
4. वार्षिक पत्र  
5. दैनिक पत्र  
6. साप्ताहिक पत्र  
7. पाक्षिक पत्र  
8. सरकारी पत्र  
9. साहित्यिक पत्र  
10. निमंत्रण पत्र

---

## NCERT Solution

---

**उत्तर2:** इक प्रत्यय के योग से बनने वाले शब्द -

1. स्वाभाविक
2. साहित्यिक
3. व्यवसायिक
4. दैनिक
5. प्राकृतिक
6. जैविक
7. प्रारंभिक
8. पौराणिक
9. ऐतिहासिक
10. सांस्कृतिक

- उत्तर3:**
1. गुरूपदेश = गुरु + उपदेश (उ + उ)
  2. संग्रहालय = संग्रह + आलय (अ + आ)
  3. हिमालय = हिम + आलय (अ + आ)
  4. भोजनालय = भोजन + आलय (अ + आ)
  5. स्वेच्छा = सु + इच्छा (उ + इ)
  6. अनुमति = अनु + मति (उ + अ)
  7. रवीन्द्र = रवि + इन्द्र (इ + इ)
  8. विद्यालय = विद्या + आलय (आ + आ)
  9. सूर्य + उदय = सूर्योदय (अ + उ)
  10. सदा + एव = सदैव (आ + ए)
-

## पाठ - 06

### भगवान के डाकिए

कविता से:

**उत्तर1:** कवि ने पक्षी और बादल को भगवान के डाकिए इसलिए कहा है क्योंकि जिस प्रकार डाकिए संदेश लाने का काम करते हैं, उसी प्रकार पक्षी और बादल भगवान का संदेश हम तक पहुँचाते हैं। उनके लिए संदेश को हम भले ही न समझ पाए, पर पेड़, पौधे, पानी और पहाड़ उसे भली प्रकार पढ़-समझ लेते हैं। जिस तरह बादल और पक्षी दूसरे देश में जाकर भी भेदभाव नहीं करते उसी तरह हमें भी आचरण करना चाहिए।

**उत्तर2:** पक्षी और बादल द्वारा लायी गई चिट्ठियों को पेड़-पौधे, पानी और पहाड़ पढ़ पाते हैं।

**उत्तर3:** (क) पक्षी और बादल,

ये भगवान के डाकिए हैं,  
जो एक महादेश से  
दूसरे महादेश को जाते हैं।  
हम तो समझ नहीं पाते हैं  
मगर उनकी लाई चिट्ठियाँ  
पेड़, पौधे, पानी और पहाड़  
बाँचते हैं।

(ख) और एक देश का भाप

दूसरे देश में पानी  
बनकर गिरता है।

**उत्तर4:** कवि का कहना है कि पक्षी और बादल भगवान के डाकिए हैं। जिस प्रकार डाकिए संदेश लाने का काम करते हैं, उसी प्रकार पक्षी और बादल भगवान का संदेश लाने का काम करते हैं। पक्षी और बादल की चिट्ठियों में पेड़-पौधे, पानी और पहाड़ भगवान के भेजे एकता और सद्भावना के संदेश को पढ़ पाते हैं। इसपर अमल करते नदियाँ समान भाव से सभी लोगों में अपने पानी को बाँटती हैं। पहाड़ भी समान रूप से सबके साथ खड़ा होता है। पेड़-पौधे समान भाव से अपने फल, फूल व सुगंध को बाँटते हैं, कभी भेदभाव नहीं करते।

**उत्तर5:** एक देश की धरती अपने सुगंध व प्यार को पक्षियों के माध्यम से दूसरे देश को भेजकर सद्भावना का संदेश भेजती है। धरती अपनी भूमि में उगने वाले फूलों की सुगंध को हवा से, पानी को बादलों के रूप में भेजती है। हवा में उड़ते हुए पक्षियों के पंखों पर प्रेम-प्यार

---

## NCERT Solution

---

की सुगंध तैरकर दूसरे देश तक पहुँच जाती है। इस प्रकार एक देश की धरती दूसरे देश को सुगंध भेजती है।

**पाठ से आगे:**

**उत्तर1:** पक्षी और बादल की चिट्ठियों के आदान-प्रदान को हम प्रेम, सौहार्द और आपसी सद्भाव की दृष्टि से देख सकते हैं। यह हमें यहीं संदेश देते हैं।

**उत्तर2:** पक्षी और बादल प्रकृति के अनुसार काम करते हैं किंतु, इंटरनेट मनुष्य के अनुसार काम करते हैं। बादल का कार्य प्रकृति-प्रेमी को प्रभावित करती है किंतु, इंटरनेट विज्ञान प्रेमी को प्रभावित करती है। पक्षी और बादल का कार्य धीमी गति से होता है किंतु, इंटरनेट का कार्य तीव्र गति से होता है। इंटरनेट एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक बात पहुँचाने का ही सरल तथा तेज माध्यम है। इसके द्वारा हम किसी व्यक्तिगत रायों को जान सकते हैं किन्तु पक्षी और बादल की चिट्ठियाँ हमें भगवान का सन्देश देते हैं। वे बिना भेदभाव के सारी दुनिया में प्रेम और एकता का संदेश देते हैं। हमें भी इंटरनेट के माध्यम से प्रेम और एकता और भाईचारा का संदेश विश्व में फैलाना चाहिए।

**उत्तर3:** डाकिया' भारतीय सामाजिक जीवन की एक आधारभूत कड़ी है। डाकिया द्वारा डाक लाना, पत्रों का बेसब्री से इंतज़ार, डाकिया से ही पत्र पढ़वाकर उसका जवाब लिखवाना इत्यादि तमाम महत्त्वपूर्ण पहलू हैं, जिन्हें नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता। उसके परिचित सभी तबके के लोग हैं। हमारे जीवन में डाकिए की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। भले ही अब कंप्यूटर और ई-मेल का ज़माना आ गया है पर, डाकिया का महत्त्व अभी भी उतना ही बना हुआ है जितना पहले था।

कई अन्य देशों ने होम-टू-होम डिलीवरी को खत्म करने की तरफ कदम बढ़ाये हैं, या इसे सुविधा-शुल्क से जोड़ दिया है, वहीं भारतीय डाकिया आज भी सुबह से शाम तक चलता ही रहता है। डाकिया कम वेतन पाकर भी अपना काम अत्यन्त परिश्रम और लगन के साथ संपन्न करता है। गर्मी, जाड़ा और बरसात का सामना करते हुए वह समाज की सेवा करता है। भारतीय डाक प्रणाली की गुडविल बनाने में उनका सर्वाधिक योगदान माना जाता है।

---

**आपके विचार से:**

**उत्तर1:** लेखक ने अपने व्यक्तिगत अनुभवों का वर्णन करते हुए कहा है कि उसने धोखा भी खाया है परंतु बहुत कम स्थलों पर विश्वासघात नाम की चीज मिलती है। पर उसका मानना है कि अगर वो इन धोखों को याद रखेगा तो उसके लिए विश्वास करना बेहद कष्टकारी होगा और ऐसी घटनाएँ भी बहुत कम नहीं हैं जब लोगों ने अकारण उनकी सहायता की है, निराश मन को ढाँढस दिया है और हिम्मत बँधाई है।

टिकट बाबू द्वारा बचे हुए पैसे लेखक को लौटाना, बस कंडक्टर द्वारा दूसरी बस व बच्चों के लिए दूध लाना आदि ऐसी घटनाएँ हैं। इसलिए उसे विश्वास है कि समाज में मानवता, प्रेम, आपसी सहयोग समाप्त नहीं हो सकते।

**उत्तर2:** दोषों का पर्दाफाश करना तब बुरा रूप ले सकता है जब हम किसी के आचरण के गलत पक्ष को उद्घाटित कर के उस में रस लेते हैं या जब हमारे ऐसा करने से वे लोग उग्र रूप धारण कर किसी को हानि पहुँचाए।

**उत्तर3:** इस प्रकार के पर्दा फाश से समाज में व्याप्त बुराईयों से, अपने आस-पास के वातावरण तथा लोगों से अवगत हो जाते हैं और इसके कारण समाज में जागरूकता भी आती है साथ ही समाज समय रहते ही सचेत और सावधान हो जाता है।

**कारण बताइए:**

- उत्तर1:** 1. "सच्चाई केवल भीरु और बेबस लोगों के हिस्से पड़ी है। - तानाशाही बढ़ेगी  
2. "झूठ और फरेब का रोज़गार करनेवाले फल-फूल रहे हैं।" - भ्रष्टाचार बढ़ेगा  
3. "हर आदमी दोषी अधिक दिख रहा है, गुणी कम।" - अविश्वास बढ़ेगा

**सार्थक शीर्षक:**

**उत्तर1:** लेखक ने इस लेख का शीर्षक 'क्या निराश हुआ जाए' उचित रखा है। आजकल हम अराजकता की जो घटनाएँ अपने आसपास घटते देखते रहते हैं। जिससे हमारे मन में निराशा भर जाती है। लेकिन लेखक हमें उस समय समाज के मानवीय गुणों से भरे लोगों को और उनके कार्यों को याद करने कहा है जिससे हम निराश न हो। इसका अन्य शीर्षक 'हम निराशा से आशा' भी रख सकते हैं।

## NCERT Solution

---

**उत्तर2:** "आदर्शों की बातें करना तो बहुत आसान है पर उन पर चलना बहुत कठिन है।" - मैं इस कथन से सहमत हूँ क्योंकि व्यक्ति जब आदर्शों की राह पर चलता है तब उसे कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। असामाजिक तत्वों का अकेले सामना करना पड़ता है।

### भाषा की बात

**उत्तर1:**

सुख और दुख	सुख-दुख
भूख और प्यास	भूख-प्यास
हँसना और रोना	हँसना-रोना
आते और जाते	आते-जाते
राजा और रानी	राजा-रानी
चाचा और चाची	चाचा-चाची
सच्चा और झूठा	सच्चा-झूठा
पाना और खोना	पाना-खोना
पाप और पुण्य	पाप-पुण्य
स्त्री और पुरुष	स्त्री-पुरुष
राम और सीता	राम-सीता
आना और जाना	आना-जाना

**उत्तर2:** जातिवाचक संज्ञा: बस, यात्री, मनुष्य, ड्राइवर, कंडक्टर,  
हिन्दू, मुस्लिम, आर्य, द्रविड़, पति, पत्नी आदि।  
भाववाचक संज्ञा : ईमानदारी, सच्चाई, झूठ, चोर, डकैत आदि।

---

---

## पाठ-08

### यह सब से कठिन समय नहीं

**1. "यह कठिन समय नहीं है?" यह बताने के लिए कविता में कौन-कौन से तर्क प्रस्तुत किए गए हैं? स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर:-** "यह कठिन समय नहीं है?" – यह बताने के लिए कवि ने निम्नलिखित तर्क दिए हैं –

1. अभी भी चिड़िया चोंच में तिनका दबाए उड़ने को तैयार है क्योंकि वह नीड़ का निर्माण करना चाहती है।
2. एक हाथ झड़ती हुई पत्ती को सहारा देने के लिए बैठा है।
3. अभी भी एक रेलगाड़ी गंतव्य अर्थात् पहुँचने वाले स्थान तक जाती है।
4. नानी की कथा का अखिरी हिस्सा बाकी है।
5. अभी भी एक बस अंतरिक्ष के पार की दुनिया से बचे हुए लोगों की खबर लाएगी।
6. अभी भी कोई किसी को कहता है कि जल्दी आ जाओ, सूरज डूबने का समय हो चला है।

**2. चिड़िया चोंच में तिनका दबाकर उड़ने की तैयारी में क्यों है? वह तिनकों का क्या करती होगी? लिखिए।**

**उत्तर:-** चिड़िया अपनी चोंच में तिनका दबाकर उड़ने की तैयारी में है क्योंकि सूरज डूबने का समय हो चुका है। उसके डूबने से पहले चिड़िया अपने लिए घोंसला बनाना चाहती है। वह तिनके से अपने लिए घोंसला तैयार कर उसमें अपने बच्चों के साथ रहेगी। घोंसला उसके परिवार को सुरक्षा प्रदान करता है।

**3. कविता में कई बार 'अभी भी' का प्रयोग करके बातें रखी गई है। अभी भी का प्रयोग करते हुए तीन वाक्य बनाइए और देखिए उसमें लगातार, निरंतर, बिना रुके चलनेवाले किसी कार्य का भाव निकल रहा है या नहीं?**

**उत्तर:-** 1. मुझे अभी भी सिरदर्द है।

2. अभी भी गाँव में बच्चे कई मील पैदल चलकर स्कूल जाते हैं।

---

3. हम अभी भी अंग्रेजी सीख रहे हैं।

तीनों वाक्यों में निरंतरता का भाव निकल रहा है।

**4. "नहीं" और "अभी भी" को एक साथ प्रयोग करके तीन वाक्य लिखिए और देखिए 'नहीं' 'अभी भी' के पीछे कौन-कौन से भाव छिपे हो सकते हैं?**

**उत्तर:-** (i) नहीं, अभी भी मेरी परीक्षा की तैयारी कम है।

(ii) नहीं, अभी भी इमारत का निर्माण नहीं हुआ है।

(iii) नहीं, अभी भी मेहमान के आने में देर हैं।

अभी भी, निरंतर चलने वाली प्रक्रिया का बोध कराता है तथा नहीं से कार्य के न होने का पता चलता है।

**5. आप जब भी घर से स्कूल जाते हैं कोई आपकी प्रतीक्षा कर रहा होता है। सूरज डूबने का समय भी आपको खेल के मैदान से घर लौट चलने की सूचना देता है कि घर में कोई आपकी प्रतीक्षा कर रहा है – प्रतीक्षा करनेवाले व्यक्ति के विषय में आप क्या सोचते हैं? अपने विचार लिखिए।**

**उत्तर:-** प्रतीक्षा करनेवाले व्यक्ति हमारे प्रियजन ही हो सकते हैं। मेरे तो दिन की शुरुआत और अंत माँ के प्यार से ही होता है। सुबह में प्यार से माथा चूमकर जगाने में माँ का प्यार, नाश्ते में बनी पसंद की चीज़ों में माँ का प्यार, भले-बुरे की डाँट में माँ का प्यार, सूरज डूबने के साथ खेल के मैदान से घर लौट चलने की सूचना देता माँ का प्यार तथा जीने का सलीका सिखाता माँ का प्यार।



# NCERT Solution

---

## पाठ - 09 कबीर की साखियाँ

पाठ से:

**उत्तर1:** 'तलवार का महत्व होता है, म्यान का नहीं' से कबीर यह कहना चाहता है कि असली चीज़ की कद्र की जानी चाहिए। दिखावटी वस्तु का कोई महत्त्व नहीं होता। इसी प्रकार किसी व्यक्ति की पहचान अथवा उसका मोल उसकी काबलियत के अनुसार तय होता है न कि कुल, जाति, धर्म आदि से। उसी प्रकार ईश्वर का भी वास्तविक ज्ञान जरूरी है। ढोंग-आडंबर तो म्यान के समान निरर्थक है। असली बहम को पहचानो और उसी को स्वीकारो।

**उत्तर2:** कबीरदास जी इस पंक्ति के द्वारा यह कहना चाहते हैं कि भगवान का स्मरण एकाग्रचित होकर करना चाहिए। इस साखी के द्वारा कबीर केवल माला फेरकर ईश्वर की उपासना करने को ढोंग बताते हैं।

**उत्तर3:** घास का अर्थ है पैरों में रहने वाली तुच्छ वस्तु। कबीर अपने दोहे में उस घास तक की निंदा करने से मना करते हैं जो हमारे पैरों के तले होती है। कबीर के दोहे में 'घास' का विशेष अर्थ है। यहाँ घास दबे-कुचले व्यक्तियों की प्रतीक है। कबीर के दोहे का संदेश यही है कि व्यक्ति या प्राणी चाहे वह जितना भी छोटा हो उसे तुच्छ समझकर उसकी निंदा नहीं करनी चाहिए। हमें सबका सम्मान करना चाहिए।

**उत्तर4:** "जग में बैरी कोइ नहीं, जो मन सीतल होय।  
या आपा को डारि दे, दया करै सब कोय।।

पाठ से आगे:

**उत्तर1:** "या आपा को . . . . . आपा खोय।" इन दो पंक्तियों में 'आपा' को छोड़ देने की बात की गई है। यहाँ 'आपा' अहंकार के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। 'आपा' घमंड का अर्थ देता है।

**उत्तर2:** आपा और आत्मविश्वास में तथा आपा और उत्साह में अंतर हो सकता है -

1. आपा और आत्मविश्वास - आपा का अर्थ है अहंकार जबकि आत्मविश्वास का अर्थ है अपने ऊपर विश्वास।

## NCERT Solution

---

2. आपा और उत्साह - आपा का अर्थ है अहंकार जबकि उत्साह का अर्थ है किसी काम को करने का जोश।

**उत्तर3:** "आवत गारी एक है, उलटत होइ अनेक।

कह कबीर नहिं उलटिए, वही एक की एक॥"

मनुष्य के एक समान होने के लिए सबकी सोच का एक समान होना आवश्यक है।

**उत्तर4:** कबीर के दोहों को साखी इसलिए कहा जाता है क्योंकि इनमें श्रोता को गवाह बनाकर साक्षात् ज्ञान दिया गया है। कबीर समाज में फैली कुरीतियों, जातीय भावनाओं, और बाह्य आडंबरों को इस ज्ञान द्वारा समाप्त करना चाहते थे।

**भाषा की बात**

**उत्तर1:** ग्यान - ज्ञान

जीभि - जीभ

पाऊँ - पाँव

तलि - तले

आँखि - आँख

बरी - बड़ी

---

## पाठ - 10

### कामचोर

#### कहानी से:

**उत्तर1:** कहानी में 'मोटे-मोटे किस काम के हैं' बच्चों के बारे में कहा गया है क्योंकि वे घर के कामकाज में जरा सी भी मदद नहीं करते थे तथा दिन भर उधम मचाते रहते थे। इस तरह से ये कामचोर हो गए थे।

**उत्तर2:** बच्चों के उधम मचाने से घर अस्त-व्यस्त हो गया। मटके-सुराहियाँ इधर-उधर लुढ़क गए। घर के सारे बर्तन अस्त-व्यस्त हो गए। पशु-पक्षी इधर-उधर भागने लगे। घर में धूल, मिट्टी और कीचड़ का ढेर लग गया। मटर की सब्जी बनने से पहले भेड़ें खा गईं। मुर्गे-मुर्गियों के कारण कपड़े गंदे हो गए। इस वजह से पारिवारिक शांति भी भंग हो गई। अम्मा ने तो घर छोड़ने का भी फैसला ले लिया।

**उत्तर3:** अम्मा ने बच्चों द्वारा किए गए घर के हालत को देखकर ऐसा कहा था। जब पिताजी ने बच्चों को घर के काम काज में हाथ बँटाने को कहा तब उन्होंने इसके विपरीत सारे घर को तहस-नहस कर दिया। जिससे अम्मा जी बहुत परेशान हो गई थीं। इसका परिणाम ये हुआ कि पिताजी ने घर की किसी भी चीज़ को बच्चों को हाथ ना लगाने कि हिदायत दे डाली। अगर किसी ने घर का काम किया तो उसे रात का खाना नहीं दिया जाएगा।

**उत्तर4:** यह एक हास्यप्रधान कहानी है। यह कहानी संदेश देती है की बच्चों को घर के कामों से अनभिज्ञ नहीं होना चाहिए। उन्हें उनके स्वभाव के अनुसार, उम्र और रुचि ध्यान में रखते हुए काम कराना चाहिए। जिससे बचपन से ही उनमें काम के प्रति लगन तथा रुचि उत्पन्न हो न कि ऊब।

**उत्तर5:** बच्चों द्वारा लिया गया निर्णय उचित नहीं था क्योंकि स्वयं हिलकर पानी न पीने का निश्चय उन्हें और भी कामचोर बना देगा। वे कभी-भी कोई काम करना सीख ही नहीं पाएँगे। बच्चों को काम तो करना चाहिए पर समझदारी के साथ। बड़ों को उनको काम सिखाना चाहिए और आवश्यकता अनुसार मार्गदर्शन देना चाहिए।

#### कहानी से आगे:

**उत्तर1:** अपनी क्षमता के अनुसार काम करना इसलिए जरूरी है क्योंकि क्षमता के अनुरूप किया गया कार्य सही और सुचारु रूप से होता है। यदि हम अपने घर का काम या अपना निजी काम, नहीं करेंगे तो हम कामचोर बन जाएँगे। हमें अपने कामों के लिए आत्मनिर्भर रहना चाहिए।

---

## NCERT Solution

---

**उत्तर2:** भरा-पूरा परिवार तब सुखद बन सकता है जब सब मिल-जुलकर कार्य करें व दुखद तब बनता है जब सब स्वार्थ भावना से कार्य करें। कामों के क्षमतानुसार विभाजित करने से कहानी जैसी दुखद स्थिति से बचा जा सकता है। कार्यों को बाँटने से किसी दूसरे को काम करने के लिए कहने की जरूरत होगी और तनाव भी उत्पन्न नहीं होगा।

**उत्तर3:** बड़े होते बच्चे यदि माता-पिता को छोटे-मोटे कार्यों में मदद करें तो वे उनके सहयोगी हो सकते हैं जैसे अपना कार्य स्वयं, अपने-आप स्कूल के लिए तैयार हो जाएँ, अपने खाने के बर्तन यथा सम्भव स्थान पर रख आएँ, अपने कमरे को सहज कर रखें।

यदि हम बच्चों को उनका कार्य करने की सीख नहीं देते तो वह सहयोग के स्थान पर माता-पिता के लिए भार ही साबित होंगे। उनके बड़ा होने पर उनसे कोई कार्य कराया जाएगा तो वह उस कार्य को भली-भाँति करने के स्थान पर तहस-नहस ही कर देंगे, जैसे की कामचोर लेख पर बच्चों ने सारे घर का हाल कर दिया था। इसलिए माता-पिता को बच्चों को उनके स्वभाव के अनुसार, उम्र और रुचि ध्यान में रखते हुए काम कराना चाहिए। जिससे बचपन से ही उनमें काम के प्रति लगन तथा रुचि उत्पन्न हो न कि ऊब। और उनके सहयोगी हो सके।

**उत्तर4:** कामचोर कहानी संयुक्त परिवार की कहानी है इन दोनों में अन्तर इस प्रकार है -

एकल परिवार में सदस्यों की संख्या तीन से चार होती है - माँ, पिता व बच्चे होते हैं। संयुक्त परिवार में सदस्यों की संख्या ज़्यादा होती है क्योंकि इसमें चाचा-चाची ताऊजी-ताईजी, माँ-पिताजी, बच्चे सभी सम्मिलित होते हैं। एकल परिवार में सारा कार्य स्वयं करना पड़ता है जबकि संयुक्त परिवार में सबलोग मिल-जुलकर कार्य करते हैं। एकल परिवार में जीवन के सुख-दुख का अकेले सामना करना पड़ता है जबकि संयुक्त परिवार में सारे सदस्य मिलकर जीवन के सुख-दुख का सामना करते हैं।

### भाषा की बात

**उत्तर1:** 1. प्र - प्रबल, प्रभाव, प्रयोग, प्रचलन, प्रवचन  
2. आ - आमरण, आभार, आजन्म, आगत  
3. भर - भरपेट, भरपूर, भरमार, भरसक  
4. बद - बदसूरत, बदमिज़ाज, बदनाम, बदतर

---

## पाठ - 11

### जब सिनेमा ने बोलना सीखा

पाठ से:

**उत्तर1:** देश की पहली बोलती फिल्म के विज्ञापन के लिए छापे गए वाक्य इस प्रकार थे -

"वे सभी सजीव हैं, साँस ले रहे हैं, शत-प्रतिशत बोल रहे हैं, अठहत्तर मुर्दा इनसान जिंदा हो गए, उनको बोलते, बातें करते देखो।"

पाठ के आधार पर 'आलम आरा' में कुल मिलाकर 78 चेहरे थे अर्थात् काम कर रहे थे।

**उत्तर2:** फिल्मकार अर्देशिर एम. ईरानी ने 1929 में हॉलीवुड की एक बोलती फिल्म 'शो बोट' देखी और तभी उनके मन में बोलती फिल्म बनाने की इच्छा जगी। इस फिल्म का आधार उन्होंने पारसी रंगमंच के एक लोकप्रिय नाटक से लिया।

**उत्तर3:** विठ्ठल को फिल्म से इसलिए हटाया गया कि उन्हें उर्दू बोलने में परेशानी होती थी। पुनः अपना हक पाने के लिए उन्होंने मुकदमा कर दिया। विठ्ठल मुकदमा जीत गए और भारत की पहली बोलती फिल्म के नायक बनें।

**उत्तर4:** पहली सवाक् फिल्म के निर्माता-निर्देशक अर्देशिर को प्रदर्शन के पच्चीस वर्ष पूरे होने पर सम्मानित किया गया और उन्हें "भारतीय सवाक् फिल्मों का पिता" कहा गया तो उन्होंने उस मौके पर कहा था, - "मुझे इतना बड़ा खिताब देने की जरूरत नहीं है। मैंने तो देश के लिए अपने हिस्से का जरूरी योगदान दिया है।" इस प्रसंग की चर्चा करते हुए लेखक ने अर्देशिर को विनम्र कहा है।

पाठ से आगे:

**उत्तर1:** मूक सिनेमा ने बोलना सीखा तो बहुत सारे परिवर्तन हुए। बोलती फिल्म बनने के कारण अभिनेताओं पढ़ा-लिखा होना ज़रूरी हो गया, क्योंकि अब उन्हें संवाद भी बोलने पड़ते थे। दर्शकों पर भी अभिनेताओं का प्रभाव पड़ने लगा। नायक-नायिका के लोकप्रिय होने से औरतें अभिनेत्रियों की केश सज्जा तथा उनके कपड़ों की नकल करने लगीं। दृश्य और श्रव्य माध्यम के एक ही फिल्म में समिश्रित हो जाने से तकनीकी दृष्टि से भी बहुत सारे परिवर्तन हुए।

**उत्तर2:** फिल्मों में जब अभिनेताओं को दूसरे की आवाज़ दी जाती है तो उसे डब कहते हैं।

---

## NCERT Solution

कभी-कभी फिल्मों में आवाज़ तथा अभिनेता के मुँह खोलने में अंतर आ जाता है क्योंकि डब करने वाले और अभिनय करने वाले की बोलने की गति समान नहीं होती या किसी तकनीकी दिक्कत के कारण हो जाता है।

### भाषा की बात

उत्तर1: शब्द - उपसर्ग वाले शब्द

- (i) हित - सहित
- (ii) परिवार - सपरिवार
- (iii) विनय - सविनय
- (iv) चित्र - सचित्र
- (v) बल - सबल
- (vi) मान - सम्मान

उत्तर2:

मूल शब्द	उपसर्ग	नया शब्द
पुत्र	सु	सुपुत्र
घट	औ	औघट
सार	अनु	अनुसार
मुख	आ	आमुख
परिवार	स	सपरिवार
नायक	अधि	अधिनायक
मरण	आ	आमरण
संहार	उप	उपसंहार
ज्ञान	अ	अज्ञान
यश	सु	सुयश
कोण	सम	समकोण
कर्म	सत्	सत्कर्म
राग	अनु	अनुराग
बंध	नि	निबंध
पका	अध	अधपका

## NCERT Solution

---

मूल शब्द	प्रत्यय	नया शब्द
चाचा	ऐरा	चचेरा
लेख	क	लेखक
काला	पन	कालापन
लड़	आई	लड़ाई
सज	आवट	सजावट
अंश	तः	अंशतः
सुनार	इन	सुनारिन
जल	ज	जलज
पर	जीवी	परजीवी
खुद	आई	खुदाई
ध्यान	पूर्वक	ध्यानपूर्वक
चिकना	आहट	चिकनाहट
विशेष	तया	विशेषतया
चमक	ईला	चमकीला
भारत	ईय	भारतीय

## पाठ - 12

### सुदामा चरित

कविता से:

**उत्तर1:-** सुदामा की दीनदशा को देखकर दुख के कारण श्री कृष्ण की आँखों से अश्रुधारा बहने लगी। उन्होंने सुदामा के पैरों को धोने के लिए पानी मँगवाया। परन्तु उनकी आँखों से इतने आँसू निकले की उन्हीं आँसुओं से सुदामा के पैर धुल गए।

**उत्तर2:-** प्रस्तुत दोहे में यह कहा गया है कि जब सुदामा दीन-हीन अवस्था में कृष्ण के पास पहुँचे तो कृष्ण उन्हें देखकर व्यथित हो उठे। श्रीकृष्ण ने सुदामा के आगमन पर उनके पैरों को धोने के लिए परात में पानी मँगवाया परन्तु सुदामा की दुर्दशा देखकर श्रीकृष्ण को इतना कष्ट हुआ कि वे स्वयं रो पड़े और उनके आँसुओं से ही सुदामा के पैर धुल गए। अर्थात् परात में लाया गया जल व्यर्थ हो गया।

**उत्तर3:-** (क) उपर्युक्त पंक्ति श्रीकृष्ण अपने बालसखा सुदामा से कह रहे हैं।

(ख) अपनी पत्नी द्वारा दिए गए चावल संकोचवश सुदामा श्रीकृष्ण को भेंट स्वरूप नहीं दे पा रहे हैं। परन्तु श्रीकृष्ण सुदामा पर दोषारोपण करते हुए इसे चोरी कहते हैं और कहते हैं कि चोरी में तो तुम पहले से ही निपुण हो।

(ग) बचपन में जब कृष्ण और सुदामा साथ-साथ संदीपन ऋषि के आश्रम में अपनी-अपनी शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। तभी एकबार जब श्रीकृष्ण और सुदामा जंगल में लकड़ियाँ एकत्र करने जा रहे थे तब गुरुमाता ने उन्हें रास्ते में खाने के लिए चने दिए थे। सुदामा श्रीकृष्ण को बिना बताए चोरी से चने खा लेते हैं। श्रीकृष्ण उसी चोरी का उपालंभ सुदामा को देते हैं।

**उत्तर4:-** द्वारका से खाली हाथ लौटते समय सुदामा का मन बहुत दुखी था। वे कृष्ण द्वारा अपने प्रति किए गए व्यवहार के बारे में सोच रहे थे कि जब वे कृष्ण के पास पहुँचे तो कृष्ण ने आनन्द पूर्वक उनका आतिथ्य सत्कार किया था। क्या वह सब दिखावटी था? वे कृष्ण के व्यवहार से खीझ रहे थे क्योंकि उन्हें आशा थी कि श्रीकृष्ण उनकी दरिद्रता दूर करने के लिए धन-दौलत देकर विदा करेंगे परन्तु श्रीकृष्ण ने उन्हें चोरी की उलहाना देकर खाली हाथ ही वापस भेज दिया।

---



## NCERT Solution

---

**उत्तर5:-** द्वारका से लौटकर सुदामा जब अपने गाँव वापस आएँ तो अपनी झोंपड़ी के स्थान पर बड़े-बड़े भव्य महलों को देखकर सबसे पहले तो उनका मन भ्रमित हो गया कि कहीं मैं घूम फिर कर वापस द्वारका ही तो नहीं चला आया। फिर भी उन्होंने पूरा गाँव छानते हुए सबसे पूछा लेकिन उन्हें अपनी झोंपड़ी नहीं मिली।

**उत्तर6:-** श्रीकृष्ण की कृपा से निर्धन सुदामा की दरिद्रता दूर हो गई। जहाँ सुदामा की टूटी-फूटी सी झोंपड़ी रहा करती थी, वहाँ अब सोने का महल खड़ा है। कहाँ पहले पैरों में पहनने के लिए चप्पल तक नहीं थी, वहाँ अब घूमने के लिए हाथी घोड़े हैं, पहले सोने के लिए केवल यह कठोर भूमि थी और अब शानदार नरम-मुलायम बिस्तरों का इंतजाम है, कहाँ पहले खाने के लिए चावल भी नहीं मिलते थे और आज प्रभु की कृपा से खाने को मनचाही चीज उपलब्ध है। परन्तु वे अच्छे नहीं लगते।

### भाषा की बात

**उत्तर1:-** "कै वह टूटी-सी छानी हती, कहँ कंचन के अब धाम सुहावत।"- यहाँ अतिशयोक्ति अलंकार है।

टूटी सी झोंपड़ी के स्थान पर अचानक कंचन के महल का होना अतिशयोक्ति है।

---

## पाठ - 13 जहाँ पहिया हैं

**जंजीरे:**

**उत्तर1:** लेखक जंजीरों द्वारा रूढ़िवादी प्रथाओं की ओर इशारा कर रहा है।

**उत्तर2:** "...उन जंजीरों को तोड़ने का जिनमें वे जकड़े हुए हैं, कोई-न-कोई तरीका लोग निकाल ही लेते हैं.. लेखक के इस कथन से हम सहमत हैं क्योंकि मनुष्य स्वभावानुसार अधिक समय तक बंधनों में नहीं रह सकते। समाज द्वारा बनाई गई रूढ़ियाँ अपनी सीमाओं को लाँघने लगे तो समाज में इसके विरुद्ध एक क्रांति अवश्य जन्म लेती है। जो इन रूढ़ियों के बंधनों को तोड़ डालती है। ठीक वैसे ही तमिलनाडु के पुडुकोट्टई गाँव में हुआ है। महिलाओं ने अपनी स्वाधीनता व आज़ादी के लिए साइकिल चलाना आरंभ किया और वह आत्मनिर्भर हो गई।

**पहिया:**

**उत्तर1:** 'साइकिल आंदोलन' से पुडुकोट्टई की महिलाओं के जीवन में निम्नलिखित बदलाव आए -

1. महिलाएँ अपनी स्वाधीनता व आज़ादी के प्रति जागृत हुईं।
2. कृषि उत्पादों को समीपवर्ती गाँवों में बेचकर उनकी आर्थिक स्थिति सुधरी व आत्मनिर्भर हो गई।
3. समय और श्रम की बचत हुई।
4. स्वयं के लिए आत्मसम्मान की भावना पैदा हुई।

**उत्तर2:** शुरुआत में पुरुषों ने इस आंदोलन का विरोध किया क्योंकि उन्हें डर था इससे नारी समाज में जागृति आ जाएगी। आर. साइकिल्स के मालिक गाँव के एकमात्र लेडीज साइकिल डीलर थे, इस आंदोलन से उसकी आय में वृद्धि होना स्वभाविक था। इसलिए उसने स्वार्थवश आंदोलन का समर्थन किया।

**उत्तर3:** फातिमा ने जब इस आंदोलन की शुरुआत की तो उसको बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उसे लोगों की फ़ब्तियाँ (गंदी टिप्पणियाँ) सुननी पड़ी। फातिमा मुस्लिम परिवार से थी। जो बहुत ही रूढ़िवादी थे। उन्होंने उसके उत्साह को तोड़ने का प्रयास किया। पुरुषों ने भी इसका बहुत विरोध किया। दूसरी कठिनाई यह थी कि लेडीज साइकिल वहाँ पर्याप्त संख्या में उपलब्ध नहीं थी।

**शीर्षक की बात:**

**उत्तर1:** तमिलनाडु के रूढ़िवादी पुडुकोट्टई गाँव में महिलाओं का पुरुषों के विरुद्ध खड़े होकर 'साइकिल' को अपनी जागृति के लिए चुनना बहुत बड़ा कदम था। पहिए को

---

## NCERT Solution

गतिशीलता का प्रतीक माना जाता है और इस साइकिल आंदोलन से महिलाओं का जीवन भी गतिशील हो गया। लेखक ने इस पाठ का नाम 'जहाँ पहिया है' तमिलनाडु के पुडुकोट्टई गाँव के 'साइकिल आंदोलन' के कारण ही रखा होगा।

**उत्तर2:** 'साइकिल करेंगी-महिलाओं को आत्मनिर्भर' भी इस पाठ के लिए उपयुक्त नाम हो सकता था चूँकि साइकिल आंदोलन से महिलाएँ अपनी स्वाधीनता व आज़ादी के प्रति जागृत हुईं। कृषि उत्पादों को समीपवर्ती गाँवों में बेचकर उनकी आर्थिक स्थिति सुधरी व आत्मनिर्भर हो गई।

**साइकिल:**

**उत्तर2:** फातिमा के गाँव में पुरानी रूढ़िवादी परम्पराएँ थीं। वहाँ औरतों का साइकिल चलाना उचित नहीं माना जाता था। इन रूढ़ियों के बंधनों को तोड़कर स्वयं को पुरुषों की बराबरी का दर्जा देकर फातिमा और पुडुकोट्टई की महिलाओं को 'आज़ादी' का अनुभव होता होगा।

**भाषा की बात:**

**उत्तर1:**

उपसर्ग

अभि - अभिमान

प्र - प्रयत्न

अनु - अनुसरण

परि - परिपक्व

वि - विशेष

प्रत्यय

इक - धार्मिक (धर्म + इक)

वाला - किस्मतवाला (किस्मत + वाला)

ता - सजीवता (सजीव + ता)

ना - चढ़ना (चढ़ + ना)

नव - नव + साक्षर (नवसाक्षर)

गतिशील - गतिशील + ता (गतिशीलता)

# NCERT Solution

---

## पाठ - 14

### अकबरी लोटा

#### कहानी की बात:

**उत्तर1:** लाला झाऊलाल को बेढंगा लोटा बिलकुल पसंद नहीं था। फिर भी उन्होंने चुपचाप लोटा ले लिया क्योंकि वे अपनी पत्नी का अदब मानते थे। दूसरा वे पत्नी के तेज-तर्रार स्वभाव से भी अवगत थे उन्होंने सोचा कि अभी तो लोटे में पानी मिला है यदि चूँ कर दू तो कहीं बाल्टी में भोजन ना करना पड़े।

**उत्तर2:** दो और दो जोड़कर स्थिति को समझना - अर्थात् परिस्थिति को भाँप जाना। लोटा गिरने पर गली में मचे शोर को सुनकर आँगन में एकत्र हो गई। एक अंग्रेज को भीगे हुए तथा पैर सहलाते हुए देखकर लाला समझ गए कि स्थिति गंभीर है और लोटा अंग्रेज को लगा है। इस समय उनका चुप रहना ही ठीक है।

**उत्तर3:** अंग्रेज़ के सामने बिलवासीजी ने झाऊलाल को पहचानने से इनकार कर दिया क्योंकि अंग्रेज़ का क्रोध शांत हो जाए और अंग्रेज़ को ज़रा भी संदेह न हो कि वह लाला झाऊलाल का आदमी है। तथा वह अपनी योजना पूरी करना चाहते थे जिससे पैसे की व्यवस्था हो सके।

**उत्तर4:** बिलवासी जी ने रुपयों का प्रबंध अपने ही घर से अपनी पत्नी के संदूक से चोरी कर किया था।

**उत्तर5:** अंग्रेज़ को पुरानी ऐतिहासिक चीज़ें इकट्ठा करने का शौक था। ऐसा इसलिए कह सकते हैं क्योंकि दुकान से पुरानी पीतल की मूर्तियाँ खरीद रहा था। अंग्रेज़ ने बिलवासी के कहने पर लोटा, अकबरी लोटा समझकर 500 रुपए में खरीदा।

#### अनुमान और कल्पना:

**उत्तर1:** 'बिलवासी' जी ने यह बात 'लाला झाऊलाल' से कही क्योंकि बिलवासीजी ने रुपयों का प्रबंध अपने ही घर से अपनी पत्नी के संदूक से चोरी कर किया था इस रहस्य को वह 'झाऊलाल' के सामने खोलना नहीं चाहते थे।

**उत्तर2:** झाऊलाल के लिए बिलवासीजी ने अपनी पत्नी के संदूक से पैसे चोरी किए थे अब वे अपनी पत्नी के सोने की प्रतीक्षा में थे ताकि वह पैसे चुप-चाप संदूक में रख दे। इसलिए समस्या झाऊलाल की थी और नौद बिलवासी की उड़ी थी।

**उत्तर3:** झाऊलाल और उनकी पत्नी के बीच की इस बातचीत से निम्न बातें उजागर होती हैं -

1. झाऊलाल की पत्नी को अपने पति झाऊलाल के वादे पर भरोसा नहीं था।
-

## NCERT Solution

---

2. उनकी पत्नी ने पहले भी कुछ माँगा होगा परन्तु उन्होंने हाँ करने के बाद भी लाकर नहीं दिया होगा।
3. झाऊलाल कंजूस प्रवृत्ति के हैं।

**क्या होता यदि:**

**उत्तर1:** यदि अंग्रेज़ लोटा नहीं खरीदता तो बिलवासी जी को अपनी पत्नी से चुराए हुए रुपए लाला झाऊलाल को देने पड़ते। अन्यथा झाऊलाल अपनी पत्नी को पैसे नहीं दे पाते और अपनी पत्नी के सामने बेइज्जत होते।

**उत्तर2:** यदि अंग्रेज़ पुलिस को बुला ले तातो सम्भवतः लाला झाऊलाल को गिरफ्तार कर लिया जाता या उन्हें जुर्माना देना पड़ता।

**उत्तर3:** गले से चाबी निकालते समय यदि बिलवासी जी की पत्नी जग जाती तो चोरी जैसा घिनौना काम करने पर उन्हें अपनी पत्नी के समक्ष शर्मिंदा होना पड़ता।

**पता कीजिए:**

**उत्तर4:** बिलवासी जी ने जिस तरीके से रुपयों का प्रबंध किया, वह गलत था। अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए किसी को उल्लू नहीं बनाना चाहिए।

**भाषा की बात**

- उत्तर1:**
1. अब तक बिलवासी जी को वे अपनी आँखों से खा चुके होते।
  2. कुछ ऐसी गढ़न उस लोटे की थी कि उसका बाप डमरू, माँ चिलम रही हो।
  3. ढाई सौ रुपए तो एक साथ आँख सेंकने के लिए भी न मिलते हैं।

**उत्तर2:** 1. चैन की नींद सोना - (निश्चिंत सोना)

कुख्यात चोर के पकड़े जाने पर पुलिस चैन की नींद सोई।

2. आँखों से खा जाना - (क्रोधित होना)  
परीक्षा में कम अंक आने पर माँ ने पुत्र को ऐसे देखा मानो आँखों से ही खा जाएगी।
  3. आँख सेंकने के लिए भी न मिलना - (दुर्लभ होना)  
हस्तकला से बनी वस्तुएँ तो आजकल आँख सेंकने के लिए भी नहीं मिलती हैं।
  4. मारा-मारा फिरना - (ठोकरें खाना)  
बेटे आलीशान घर में रहते हैं और बाप बेचारा मारा-मारा फिरता हैं।
  5. डींगें सुनना - (झूठ-मूठ की तारीफ सुनना)  
लाला जी घर में तो भीगी बिल्ली है परन्तु बाहर अपनी बहादुरी की डींगें मारते फिरते हैं।
-

## पाठ - 15

### सूरदास के पद

पदों से:

**उत्तर1:** माता यशोदा ने श्रीकृष्ण को बताया की दूध पीने से उनकी चोटी बलराम भैया की तरह हो जाएगी। श्रीकृष्ण अपनी चोटी बलराम जी की चोटी की तरह मोटी और बड़ी करना चाहते थे इस लोभ के कारण वे दूध पीने के लिए तैयार हुए।

**उत्तर2:** श्रीकृष्ण अपनी चोटी के विषय में सोच रहे थे कि उनकी चोटी भी बलराम भैया की तरह लम्बी, मोटी हो जाएगी फिर वह नागिन जैसे लहराएगी।

**उत्तर3:** दूध की तुलना में श्रीकृष्ण को माखन-रोटी अधिक पसंद करते हैं।

**उत्तर4:** 'तैं ही पूत अनोखी जायौ' - पंक्तियों में ग्वालन के मन में यशोदा के लिए कृष्ण जैसा पुत्र पाने पर ईर्ष्या की भावना व कृष्ण के उनका माखन चुराने पर क्रोध के भाव मुखरित हो रहे हैं। इसलिए वह यशोदा माता को उलाहना दे रही हैं।

**उत्तर5:** श्रीकृष्ण को माखन ऊँचे टंगे छीकों से चुराने में दिक्कत होती थी इसलिए माखन गिर जाता था तथा चुराते समय वे आधा माखन खुद खाते हैं व आधा अपने सखाओं को खिलाते हैं। जिसके कारण माखन जगह-जगह ज़मीन पर गिर जाता है।

**उत्तर6:** दोनों पदों में प्रथम पद सबसे अच्छा लगता है। क्योंकि यहाँ बाल स्वभाववश प्रायः श्रीकृष्ण दूध पीने में आनाकानी किया करते थे। तब एक दिन माता यशोदा ने प्रलोभन दिया कि कान्हा ! तू नित्य कच्चा दूध पिया कर, इस से तेरी चोटी दाऊ (बलराम) जैसी मोटी व लंबी हो जाएगी। भैया के कहने पर कान्हा दूध पीने लगे। अधिक समय बीतने पर श्रीकृष्ण अपने बालपन के कारण माता से अनुनय-विनय करते हैं कि तुम्हारे कहने पर मैंने दूध पिया पर फिर भी मेरी चोटी नहीं बढ़ रही। उनकी माता से उनकी नाराज़गी व्यक्त करना, दूध न पीने का हट करना, बलराम भैया की तरह चोटी पाने का हट करना हृदय को बड़ा ही आनंद देता है।

**अनुमान और कल्पना:**

---

## NCERT Solution

**उत्तर1:** दूसरे पद को पढ़कर लगता है कि उस समय श्रीकृष्ण की उम्र चार से सात साल रही होगी तभी उनके छोटे-छोटे हाथों से सावधानी बरतने पर भी माखन बिखर जाता था।

**भाषा की बात:**

**उत्तर1:** माखन चुरानेवाला - माखनचोर

**उत्तर2:** श्रीकृष्ण के पर्यायवाची शब्द - गोविन्द, रणछोड़, वासुदेव, मुरलीधर, नन्दलाल।

**उत्तर3:**

पर्यायवाची	चंद्रमा-शशि, इंदु, राका मधुकर- भ्रमर, भौरा, मधुप सूर्य- रवि, भानु, दिनकर
विपरीतार्थक	दिन-रात श्वेत-श्याम शीत-उष्ण

पाठों से दोनों प्रकार के शब्दों को खोजकर लिखिए।

पर्यायवाची शब्द	बेनी - चोटी मैया - जननी, माँ, माता दूध - दुग्ध, पय, गोरस काढ़त - गुहत बलराम - दाऊ, हलधर ढोटा - सुत, पुत्र, बेटा
विपरीतार्थक शब्द	लम्बी - छोटी स्याम - श्वेत संग्रह - विग्रह विज - अज्ञ रात - दिन प्रकट - ओझल

# NCERT Solution

---

## पाठ - 16

### पानी की कहानी

पाठ से:

उत्तर1: लेखक को बेर की झाड़ी पर ओस की बूँद मिली।

उत्तर1: पेड़ों की जड़ों में निकले रोएँ द्वारा जल की बूँदों को बलपूर्वक धरती के भूगर्भ से खींच लाना व उनको खा जाना याद करते ही बूँद क्रोध व घृणा से काँप उठी।

उत्तर1: जब ब्रह्मांड में पृथ्वी व उसके साथी ग्रहों का उद्भव भी नहीं हुआ था तब ब्रह्मांड में हाइड्रोजन व ऑक्सीजन दो गैसों सूर्यमंडल में लपटों के रूप में विद्यमान थीं। ऑक्सीजन व हाइड्रोजन के बीच रासायनिक क्रिया हुई। दोनों के संयोग से पानी का जन्म हुआ। इसलिए बूँद ने इन दोनों को अपना पूर्वज कहा है।

उत्तर4: पानी का जन्म (हाइड्रोजन) व (ऑक्सीजन) ऑक्सीजन के बीच रासायनिक प्रक्रिया द्वारा होता है। जब ब्रह्मांड में पृथ्वी व उसके साथी ग्रहों का उद्भव भी नहीं हुआ था तब ब्रह्मांड में हाइड्रोजन व ऑक्सीजन दो गैसों सूर्यमंडल में लपटों के रूप में विद्यमान थीं। किसी उल्कापिंड के सूर्य से टकराने से सूर्य के टुकड़े कड़े हो गए उन्हीं टुकड़ों में से एक टुकड़ा पृथ्वी रूप में उत्पन्न हुआ और इसी ग्रह में ऑक्सीजन व हाइड्रोजन के बीच रासायनिक क्रिया हुई और दोनों के संयोग से पानी का जन्म हुआ। सर्वप्रथम बूँद भाप के रूप में पृथ्वी के वातावरण में ईद-गिर्द घूमती रहती है, तत्पश्चात ठोस बर्फ के रूप में विद्यमान हो जाती है। समुद्र से होती हुई वह गर्म-धारा से मिलकर ठोस रूप को त्यागकर जल का रूप धारण कर लेती है।

उत्तर5: कहानी के अंत और आरंभ के हिस्से को पढ़कर यह पता चलता है कि ओस की बूँद सूर्य उदय की प्रतीक्षा कर रही थी।

पाठ से आगे:

उत्तर3: समुद्र के तट पर बसे नगरों में अधिक ठंड और अधिक गरमी नहीं पड़ती क्योंकि वहाँ के वातावरण में सदा नमी होती है।

उत्तर4: पेड़ के भीतर फव्वारा नहीं होता तब पेड़ की जड़ों से पत्ते तक पानी पहुँचता है क्योंकि पेड़ की जड़ों व तनों में जाइलम और फ्लोएम नामक वाहिकाएँ होती हैं जो पानी जड़ों



## NCERT Solution

---

सेपत्तियों तक पहुँचाती हैं। इस क्रिया को वनस्पति शास्त्र में 'संवहन' (ट्रांसपाईरेशन) कहते हैं।

### भाषा की बात

**उत्तर1:** 1. आगे एक और बूँद मेरा हाथ पकड़कर ऊपर खींच रही थी।

पकड़कर - संबंध कारक

2. हम बड़ी तेजी से बाहर फेंक दिए गए।

तेज़ी से - अपादान कारक

3. मैं प्रति क्षण उसमें से निकल भागने की चेष्टा में लगी रहती थी।

मैं - कर्ता

4. वह चाकू से फल काटकर खाता है।

चाकू से - करण कारक

5. बदलू लाख से चूड़ियाँ बनाता है।

लाख से - करण कारक

---

# NCERT Solution

---

## पाठ - 17 बाज और साँप

कहानी से:

**उत्तर1:** घायल होने के बाद भी बाज ने यह कहा कि -

"मुझे कोई शिकायत नहीं है।" उसने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि वह किसी भी कीमत पर समझौतावादी जीवन शैली पसंद नहीं करता था। वह अपने अधिकारों के लिए लड़ने में विश्वास रखता था। उसने अपनी ज़िंदगी को भरपूर भोगा। वह असीम आकाश में जी भरकर उड़ान भर चुका था। जब तक उसके शरीर में ताकत रही तब तक ऐसा कोई सुख नहीं बचा जिसे उसने न भोगा हो। वह अपने जीवन से पूर्णतः संतुष्ट था।

**उत्तर2:** बाज ज़िंदगी भर आकाश में उड़ता रहा, उसने आकाश की असीम ऊँचाइयों को अपने पंखों से नापा। बाज साहसी था। वह किसी भी कीमत पर समझौतावादी जीवन शैली पसंद नहीं करता था। अतः कायर की मौत नहीं मरना चाहता था। वह अंतिम क्षण तक जीवन की आवश्यकताओं के लिए संघर्ष करना चाहता था।

**उत्तर3:** साँप उड़ने की इच्छा को मूर्खतापूर्ण मानता था क्योंकि वह मानता था कि वह उड़ने में सक्षम नहीं है। पर जब उसने बाज के मन में आकाश में उड़ने के लिए तड़प देखी तब साँप के मन में भी उत्सुकता जागी कि आकाश का मुक्त जीवन कैसा होता है? इस रहस्य का पता लगाना ही चाहिए। तब उसने भी आकाश में एक बार उड़ने की कोशिश करने का निश्चय किया।

**उत्तर4:** बाज की बहादुरी पर प्रसन्न होकर लहरों ने गीत गाया था। उसने अपने प्राण गँवा दिए परन्तु ज़िंदगी के खतरे का सामना करने से पीछे नहीं हटा।

**उत्तर5:** साँप का शत्रु बाज है चूँकि वो उसका आहार होता है। घायल बाज उसे किसी प्रकार का आघात नहीं पहुँचा सकता था इसलिए घायल बाज को देखकर साँप के लिए खुश होना स्वाभाविक था।

कहानी से आगे:

**उत्तर1:** कहानी की स्वतंत्रता से संबंधित पंक्तियाँ -

---

## NCERT Solution

---

1. जब तक शरीर में ताकत रही, कोई सुख ऐसा नहीं बचा जिसे न भोगा हो। दूर-दूर तक उड़ानें भरी हैं, आकाश की असीम ऊँचाइयों को अपने पंखों से नाप आया हूँ।
2. "आह! काश, मैं सिर्फ एक बार आकाश में उड़ पाता।"
3. पर वह समय दूर नहीं है, जब तुम्हारे खून की एक-एक बूँद जिंदगी के अँधेरे में प्रकाश फैलाएगी और साहसी, बहादुर दिलों में स्वतंत्रता और प्रकाश के लिए प्रेम पैदा करेगी।

**उत्तर4:** मानव ने आदिकाल से ही पक्षियों की तरह उड़ने की इच्छा मन में रखी है। किन्तु शारीरिक असमर्थता की वजह से उड़ नहीं पा रहा था जिसका परिणाम यह हुआ कि मनुष्य हवाईजहाज का आविष्कार कर दिखाया। आज मनुष्य अपने उड़ने इच्छा की पूर्ति हवाई जहाज, हेलीकॉप्टर, गैस-बैलून आदि से करता है।

### भाषा की बात

- उत्तर1:**
1. भाँप लेना - बच्चों का मुँह देखकर ताऊ जी ने परीक्षा का क्या नतीजा आया होगा यह भाँप लिया।
  2. हिम्मत बाँधना - मित्र के आने पर ही परीक्षा के लिए राहुल की हिम्मत बँधी।
  3. अंतिम साँस गिनना - दादाजी की गिरती साँसें देखकर माता जी ने स्थिति भाँप ली वे कि वे उनकी अंतिम साँस गिन रहे हैं।
  4. मन में आशा जागना - शिक्षिका की कहानी ने मेरे मन में आशा जगा दी।
  5. प्राण हथेली में रखना - सिपाही ने देशवासियों की जान बचाने के लिए अपने प्राणों को हथेली में रख देते हैं।

### उत्तर2: प्रत्यय शब्द

द - सुखद, दुखद

दाता - परामर्शदाता, सुखदाता

दाई - सुखदाई, दुखदाई

देह - विश्रामदेह, लाभदेह, आरामदेह

प्रद - लाभप्रद, हानिप्रद, शिक्षाप्रद

---

# NCERT Solution

---

## पाठ - 18

### टोपी

**कहानी से:**

**उत्तर1:** गवरइया और गवरा के बीच आदमी के वस्त्र पहनने को लेकर बहस हुई। गवरइया वस्त्र पहनने के पक्ष में थी तथा गवरा विपक्ष में था। गवरइया को आदमी द्वारा रंग-बिरंगे कपड़े पहनना अच्छा लग रहा था जब कि गवरा का कहना था कि कपड़ा पहन लेने के बाद आदमी और बदसूरत लगने लगता है। कपड़े पहन लेने के बाद आदमी की कुदरती खूबसूरती ढँक जाती है। उसी बहस के दौरान गवरइया ने अपनी टोपी पहनने की इच्छा को व्यक्त किया। उसकी इच्छा तब पूरी हुई जब एक दिन घूरे पर चुगते-चुगते उसे रुई का एक फाहामिल गया।

**उत्तर2:**

टोपी बनवाने के लिए गवरइया धुनिया, कोरी, बुनकर और दर्जी के पास गई। धुनिया के पास रुई धुनवा कर वह उसे लेकर कोरी के पास जा पहुँची। उसे कोरी से कतवा लिया। कतेसूत को लेकर वह बुनकर के पास गई उससे बुनकर से कपड़ा बुनवाया। कपड़े को लेकर वह दर्जी के पास गई। उसने उस कपड़े से गवरइया की टोपी सिल दी।

**उत्तर3:**

गवरइया की टोपी पर दर्जी ने पाँच फुँदने लगाए क्योंकि दर्जी को वाजिब मजदूरी मिली थी, जिससे वह खुश था। दर्जी राजा और उसके सेवकों के कपड़े सिलता था जो उसे बेगारकरवाते थे। लेकिन गवरइया ने अपनी टोपी सिलवाने के बदले में दर्जी को मजदूरी स्वरूप आधा कपड़ा दिया।

**उत्तर4:**

सफलता के लिए उत्साह आवश्यक है। कहा भी गया है कि मन के हारे हार है मन के जीते जीत। उत्साह से ही हमारे मन में किसी भी कार्य के प्रति जागरूकता उत्पन्न होती है। यदि हम किसी भी कार्य को बेमन से करेंगे तो निश्चय ही हमें उस कार्य में पूर्णतया सफलता नहीं मिलेगी।

**अनुमान और कल्पना:**

---

## NCERT Solution

---

### उत्तर1:

टोपी पहनकर गवरइया राजा को दिखाने पहुँची जबकि उसकी बहस गवरा से हुई और वह गवरा के मुँह से अपनी बड़ाई सुन चुकी थी। लेकिन राजा से उसकी कोई बहस हुई हीनहीं थी। फिर भी वह राजा को चुनौती देने को पहुँची क्योंकि गवरा ने बहस के दौरान कहा था कि टोपी मात्र राजा ही पहनता है। यह बात उसे अच्छी नहीं लगी थी।

### उत्तर2:यदि राजा के राज्य के सभी कारीगर अपने-

अपने श्रम का उचित मूल्य प्राप्त कर रहे होते तब गवरइया के साथ उन कारीगरों का व्यवहार सामान्य होता और सर्वप्रथम वे राजा का काम करते क्योंकि उनका काम ज्यादा था।

उत्तर3:चारों ने राजा का काम रोककर गवरइया का काम किया क्योंकि उन लोगों को काम की वाजिब मजदूरी मिली थी, जिससे वे सब खुश थे।

### भाषा की बात

#### उत्तर4:

क्षेत्रीय भाषा	मूल रूप
घड़ला	घड़ा
लड़की	लड़की
भीख	भिक्षा
तरकारी	सब्जी
भात	चावल

मुहावरा	अर्थ
टोपी उछलना	बेइज्जती होना
टोपी से ढ़क लेना	इज्जत ढ़क लेना
टोपी कसकर पकड़ना	सम्मान बचना